RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-11
November -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

पंडिता रमाबाई सरस्वती का महिला सुधार हेतु योगदान

डॉ. जय कुमार झा

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, के॰ एस॰ कॉलेज, दरभंगा (बिहार)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Nov 2019

Keywords
समाजसुधार, महिला शिक्षा, हिंदू महिला, पंडिता रमाबाई सरस्वती।

ABSTRACT

19वीं शताब्दी में भारतीय समाज सुधार आंदोलन के दौरान अनेक ऐसे बुद्धिजीवियों का उदय हुआ जिन्होंने भारतीय समाज व्यवस्था की सच्चाई को सामने लाने का प्रयास किया। इन समाज सुधारको में महिला व पुरुष दोनों ही उल्लेखनीय हैं। ज्ञातव्य है कि अंग्रेजों द्वारा भारतीय समाज की कमियां गिनाते समय महिलाओं की स्थिति को केंद्र में रखा जाता था। भारतीय समाज व्यवस्था को महिलाओं की गिरी हुई स्थिति के कारण ही बहुत ही निम्न कोटि का बताया गया जिसके फलस्वरूप भारतीय समाज सुधारको ने महिला सुधार हेतु प्रयास करना शुरू किए। लेकिन इन सबके बावजूद महिलाओं की इच्छाओं और आकांक्षाओं को कोई स्थान नहीं दिया गया था। समाज सुधारक अपने राजनीतिक प्रयोजन हेतु महिलाओं को शिक्षित करना चाह रहे थे लेकिन उनके इस प्रयोजन के परिणाम स्वरूप अनेक ऐसी महिलाएं उभर कर सामने आई जो पुरुष समाज सुधारकों के लक्ष्य से विपरीत जाकर महिलाओं की इच्छाओं और आकांक्षाओं को व्यक्त कर रही थी। पंडिता रमाबाई सरस्वती का नाम इन महिलाओं में प्रमुख रूप से लिया जाता है। पंडिता रमाबाई का जन्म एक ऐसे दौर में हुआ था जब भारत में महिलाओं की स्थिति बहुत ख़राब थी, दासों की तरह उनके साथ व्यवहार किया जाता था। पति की सेवा और बच्चों का पालन पोषण करना ही उनका कार्य होता था। अपनी इच्छा से वे कोई काम नहीं कर सकती थी उन्हें किसी भी प्रकार की कोई स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। महिलाओं का जीवन घर की चारदीवारी तक ही सीमित था, यहाँ तक की पढ़ने लिखने की भी सख्त मनाही थी। छोटी उम्र में ही उनकी शादियां कर दी जाती थी वो भी अधेड़ उम्र के पुरुष के साथ जिसके कारण वो नाबालिग अवस्था में ही विधवा बन जाती थी, उस समाज में बाल विधवाओं की बड़ी संख्या थी। पंडिता रमाबाई के पिता की शादी भी एक़ नौ साल की नाबालिग के साथ हुई थी जब की उनकी उम्र उस समय 40 साल थी।

भारत के इतिहास में कई प्रमुख सामाजिक सुधारक हुए हैं, जिन्होंने देश के उज्जवल भविष्य के लिए किए गए महत्वपूर्ण कार्यो का नेतृत्व किया। ऐसी ही एक प्रसिद्ध और दृढ़निश्चयी महिला पंडिता रमाबाई थी, जो उस समय की प्रमुख नारीवादी महिला समाज-सुधारक थी। जिनकी ख्याति पूरे विश्व में फैली हुई है पर फिर भी भारत के मुख्यधारा के इतिहास से उनकी उल्लेखनीय आलोचनाओं को मिटा दिया गया है जैसे कि उनके समय की कई अन्य प्रमुख नारीवादी महिला नेताओं के साथ भी हुआ है। हमारे लिए यह बात समझना ज़रूरी है कि पंडिता रमाबाई का इतिहास सिर्फ भारत के इतिहास से हटा देने या भुला दिए जाने का मामला नहीं है बल्कि यह ब्राह्मणवादी पितृसत्ता और जाति के प्रभुत्व के खिलाफ बगावत करने वाली एक नारीवादी महिला नेता की आवाज़ को सक्रिय रूप से दबाने का एक जानबूझकर किया गया एक प्रयास है पर यह उनके किये गए कार्यों और जीवन को याद रखने का एक कारण बनता है।

पंडिता रमाबाई को पढाई- लिखाई व शिक्षा के महत्त्व का भान उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण उन्हें सहज ही प्राप्त हुआ था। उनके पिता अनंत शास्त्री संस्कृत विद्वान तथा शिक्षक थे और अपनी आजीविका के लिए मंदिरों में पुराण आदि का पाठ सुनाया करते थे। वह खुद भी एक समाज-सुधारक थे और लड़कियों को शिक्षा देने में रूचि रखते थे। वह भी उस समय जब समाज में लड़कियों की शिक्षा निषेध थी। अपनी पत्नी लक्ष्मीबाई को संस्कृत सिखाने की वजह से समाज ने उन्हें त्याग दिया था। उनके गांव के सभी ब्राह्मणों ने उन्हें गांव से निकाल दिया, जिस कारण उन्हें गांव छोड़कर जंगलों में भटकना पड़ा और वहीं जंगलों में रमाबाई का जन्म हुआ। वह उनके तीन बच्चों में से सबसे छोटी थी। जब वह छोटी थी तभी पूरे परिवार ने एक जगह से दूसरी जगह जाना शुरू कर दिया। रमाबाई एक ऐसे परिवार में पली-बढ़ी थीं जिसने भ्रमण करते-करते भारत के अलग- अलग धार्मिक स्थलों की यात्राएं की, कथाओं का पाठ करके जीविका का प्रबंधन किया। रमाबाई को उनके पिता से संस्कृत आदि की इतनी अच्छी शिक्षा मिली थीं कि उन्हें 20 साल की उम्र में ही संस्कृत के लगभग 20 हज़ार श्लोक रटे हुए थे। वर्ष 1877 में अकाल के कारण रमाबाई के माता- पिता का निधन हो गया और उसी दौरान उनकी बड़ी बहन की भी मौत हो गई।

ऐसा माना जाता है कि रमाबाई ने 3 साल में 4000 किलोमीटर की यात्रा की। जब वह अपने भाई के साथ साल 1878 में कोलकाता पहुंची तो उनके पास कन्नड़, मराठी, बांग्ला और हिब्रु जैसी सात भाषाओं का ज्ञान और संस्कृत भाषा में तो एक बेहद सधी हुई कमान हासिल थी। 1878 कोलकाता विश्वविद्यालय के सीनेट हॉल में शास्त्रार्थ के दौरान उनके द्वारा धाराप्रवाह रूप से संस्कृत बोले जाने से प्रभावित

RRIJM 2015, All Rights Reserved

होकर विद्वानों ने उनको 'सरस्वती' की उपाधि से नवाजा था अपने समय और काल के हिसाब से उस वक्त इस प्रकार संस्कृत में धाराप्रवाह रूप से संवाद करना समय से बहुत आगे की बात थी उनके इस असाधारण ज्ञान ने विद्वानों को चकित कर दिया। कोलकाता जाने के कुछ वक़्त बाद रमाबाई के भाई का भी देहांत हो गया। जिसके बाद उन्होंने 22 साल की उम्र में शूद्र जाति के विपिन बिहारी मेधावी से विवाह किया जो पेशे से वकील थे। दोनों ने मिलकर पश्चिमी दर्शन और विचारों का अध्यन किया। उनकी एक बेटी भी हुई जिसका नाम उन्होंने मनोरमा रखा, पर शादी के अगले ही साल रमाबाई के पति का भी देहांत हो गया।

रमाबाई को भारत में वह पहचान नहीं मिली है जो उनके समकालीन समाजसुधारकों को दी गई पर ये बात कोई नकार नहीं सकता की वह महाराष्ट्र और भारत की सबसे प्रमुख नारीवादी समाज सुधारकों में से एक थी। पंडिता रमाबाई जीवन के शुरुआती वक़्त से ही सामाज सुधारक कार्यों में शामिल रही। उन्होंने शिक्षित और सशक्त होने के लिए महिलाओं को संबोधित करते हुए कलकत्ता और बंगाल प्रेसीडेंसी में व्यापक रूप से यात्राएं की। उन्होनें जीवन भर महिलाओं की मुक्ति के लिए सख्ती से काम किया। पुणे आकर उन्होंने वहां "आर्य महिला समाज" की स्थापना की, जहां पर उन्होनें लड़कियों को पढ़ाने की शुरुआत की इसके साथ ही यह संस्था बाल विवाह रोकने के लिये भी काम करती थी जिसने दिखाया कि शिक्षा के प्रति उनका विचार कितना समावेशी था और सामाजिक सुधार के लिए वह कितना प्रतिबद्ध थी। वह समाज की वास्तविक प्रगति के लिए 'आत्मनिर्भरता' के विचार में विश्वास करती थी।

पंडिता रमाबाई ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में केवल अपनी विद्वता से ही लोगों को प्रभावित नहीं किया बल्कि स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व के लिए उन्होंने स्त्री शिक्षा की पुरजोर वकालत की। उन्होंने अपने ज्ञान और विशेषकर स्त्रियों के लिए वर्जित माने जाने वाली संस्कृत भाषा के ज्ञान से सबको अचंभित किया। वह महिलाओं के लिए वर्जित संस्कृत भाषा की शिक्षा महिलाओं के लिए आवश्यक मानती थीं इसके पीछे वह कहती थीं कि इससे रूढ़ियों को ख़त्म करने में सहायता मिलेगी। साल 1882 में ब्रिटिश सरकार ने भारत में एक शिक्षा आयोग नियुक्त किया 'द हंटर एजुकेशन कमीशन।' जिसके लिए रमाबाई ने उनके सामने सुझाव देने से पहले सबूत दिए, उन्होंने लार्ड रिपन के सामने रिपोर्ट पेश की कि शिक्षकों को उनकी नौकरी के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए और स्कूलों में अधिक महिलाओं को नियुक्त किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी मांग की कि महिलाओं के लिए कुछ उपचारों के लिए चिकित्सा क्षेत्र में महिलाएं होनी चाहिए।

पंडिता रमाबाई के साक्ष्यों का यह प्रभाव था कि यह रानी विक्टोरिया तक पहुंच गया और उनके सुझावों के अनुसार लार्ड डफरीन के समय में महिलाओं की शिक्षा पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया और 1886 में आंनदीबेन जोशी पहली भारतीय महिला डॉक्टर बनी, जो की रमाबाई की चचेरी बहन थी। अमेरिका में उनके स्नातक समारोह के लिये रमाबाई को भी आमंत्रित किया गया। जिसके एक साल बाद दिसंबर 1887 मे बोस्टन में 'अमेरिकन रमाबाई एसोसिएशन' का गठन उनके प्रशंसकों ने किया। उसी दौरान उन्होंने "द हाई कास्ट हिंदू विमन" नामक पुस्तक लिखी और इसकी दस हज़ार प्रतियां बिकी। इस किताब में बाल विवाह, सती प्रथा, जाति आदि कुप्रथाओं तथा विशेष रूप से महाराष्ट्र के क्षेत्र में ब्राह्मणवादी पितृसत्ता पर प्रकाश डाला गया था।

साल 1889 में रमाबाई भारत वापस आई और 11 मार्च, 1889 को उन्होंने 20 लड़कियों के साथ मिलकर मुंबई में 'शारदा सदन' खोला। इसके अंतर्गत महिलाओं को पढ़ना लिखना, इतिहास, पर्यावरण आदि से जुड़ी जानकारी तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता था और महिलाओं कों आर्थिक सुरक्षा का आश्वासन तथा आजीविका के लिए सामाजिक स्वीकृति भी प्रदान की। साल 1889 में पुणे में अकाल की स्थिति आ गई जिसको नियंत्रित करने के लिये सरकार ने लोगों के आंदोलन पर रोक लगा दी और शारदा सदन में निवास करने वाले लोगों की संख्या पर भी एक सीमा लगा दी। रमाबाई पुणे के पास खेड़गांव गई, जहां उन्होंने 100 एकड़ जमीन खरीदी और 'मुक्ति मिशन' की स्थापना की। उन्होनें स्कूल जाने वाली महिलाओं और बच्चों को आवास प्रदान किए। जहां उन्हें शिक्षा और औद्योगिक प्रशिक्षण, मुद्रण, बढ़ईगीरी, सिलाई, चिनाई, लकड़ी काटना, बुनाई और सुईवर्क के साथ-साथ खेती और बागवानी जैसे काम सिखाए जाए।

सितंबर 1883 में पंडिता रमाबाई ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गई। जब वह 'सेंट मैरी द वर्जिन' के एंग्लिकन समुदाय के अतिथि के रूप में रह रही थी। इस परिवर्तन ने पूरे भारत में सदमे पैदा कर दिए। भारत में एक उच्च जाति की ब्राह्मण महिला ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गई थी पर उन्हें इसके लिए एक भारी कीमत भी चुकानी पड़ी, उन्हें पश्चिमी भारत और महाराष्ट्र के इतिहास में उनको जाति और समुदाय को धोखा देने के लिए हाशिए पर डाल दिया गया और उनके ऊपर शारदा सदन में विदेशी फंडिंग लेने और हिंदू महिलाओं का धर्मांतरण कराने के झूठे आरोप लगाए गए। इसके बाद उन्होंने बाइबल का मराठी भाषा में भी अनुवाद किया। साल 1919 में, उन्हें कैसर-ए-हिंद गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया।

निष्कर्ष : पंडिता रमाबाई वास्तव में एक उल्लेखनीय महिला थी जिन्होंने महिलाओं की शिक्षा का बीड़ा उठाया और महिलाओं के अधिकारों और सशक्तीकरण के लिए विद्रोह किया। रमाबाई ने जाति को हिंदू समाज में एक महान दोष और लोकतांत्रिक भावना के विकास में

एक रुकावट के रूप में देखा। साथ ही उस समय पर एक उच्च जाति की ब्रह्मण परिवार से होकर शूद्र जाति में अंतरजातीय विवाह करने के कारण भी उनकी काफी आलोचना हुई हालांकि इस कार्य को ज्योतिबा फुले तथा उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले का सहयोग प्राप्त हुआ। धर्म परिवर्तन करने पर भी उनकी काफी आलोचना की गई पर उन्होंने अपना काम जारी रखा। भारत सरकार ने भी रमाबाई के नाम पर एक डाक टिकट जारी किया था तथा उनका बनाया मुक्ति मिशन आज भी सक्रिय है। पर फिर भी लगता है कि रमाबाई को भारत में वह पहचान नहीं मिली है जो उनके समकालीन समाजसुधारकों को दी गई पर ये बात कोई नकार नहीं सकता की वह महाराष्ट्र और भारत की सबसे प्रमुख महिला विदुषी थीं। आज भी जब महिलाओं की स्थिति में सुधार की बात की जाती है तो रमाबाई जैसी नारीवादी महिलाओं के जीवन दर्शन व उनके कार्यों पर चर्चा किए बिना ऐसा करना संभव नहीं है। जब हम उस समय की बात करते है जिस समय में स्त्रियों को शिक्षा ग्रहण करने का भी अधिकार नही था उस समय में स्वयं शिक्षा ग्रहण करना तथा अन्य स्त्रियों को शिक्षित करना निश्चय ही बहुत कठिनाई भरा रहा होगा। वर्तमान में भी ऐसी बहुत सी कुरीतियाँ और सामाजिक बंधन है जो स्त्री सशक्तिकरण के मार्ग में बाधक बने हुए है। परंतु हमें इन महान समाज सुधारकों के कृत्यों से प्रेरणा लेकर स्वयं आने वाले जीवन में संघर्ष के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए।

संदर्भ सूची :

1. मीरा, कोसाम्बी (संपा.). (2000). पंडिता रमाबाई थ्रू हर ओन वर्ड्स, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. नई दिल्ली
2. उमा, चक्रवर्ती (2006). 'रिराइटिंग हिस्ट्री द लाइफ एंड राइट द पंडिता रमाबाई' ज़ुबान, दिल्ली
3. हेलेन एक्स डायर. 'पंडिता रमाबाई स्टोरी ऑफ हर लाइव' लंदन
4. ज्योत्सना, देवधर (1996). रमाबाई. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. चंद्र, सुधीर इंसिबिटर्स कॉलोनियल ऑन ह्यूमन राइट्स
6. सरकार, सुमित और सरकार, तनिका (संपा.). (2007). मधु किश्वर डॉटर्स आफ आर्यावर्त विमेन एंड सोशल रिफॉर्म इन मदर मॉडर्न इंडिया परमानेंट ब्लैक रानीखेत

RRIJM 2015, All Rights Reserved